

HbA1C जाँच

स्रोत: द हृदय

भारत मधुमेह के एक बहुत बड़े बोझ का सामना कर रहा है, जो वैश्विक मामलों का 17% है। हीमोग्लोबिन A1C (HbA1C) जाँच, जसै ग्लाइकोटेड हीमोग्लोबिन या ग्लाइकोसिलेटेड हीमोग्लोबिन परीक्षण के रूप में भी जाना जाता है, प्रारंभिक पहचान और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- HbA1C परीक्षण शर्करा-आबद्ध लाल रक्त कोशिकाओं को का आकलन कर रक्त शर्करा स्तर का 2-3 महीने का औसत प्रदान करता है, जो व्यापक दीर्घकालिक नयितरण मूल्यांकन प्रदान करता है।
 - व्रत और भोजन के बाद के परीक्षणों के विपरीत, इस जाँच में थोड़ी देर पूर्व भोजन करने से कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, जसिसे विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है।
 - **5.7% से कम HbA1C को सामान्य माना जाता है;** 5.7 और 6.4% के बीच यह संकेत हो सकता है कि व्यक्ति प्री-डायबेटिक है; तथा **6.5% या इससे अधिक मधुमेह का संकेत** दे सकता है।
 - गुरदे या यकृत की वफिलता, एनीमिया, कुछ दवाएँ और गर्भावस्था जैसे कारक परीक्षण के परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं।
- भारत में **10.13 करोड़ लोग मधुमेह से पीड़ित** हैं और 13.6 करोड़ लोग प्री-डायबेटिक हैं। **35% से अधिक भारतीय उच्च रक्तचाप से पीड़ित** हैं और लगभग **40% पेट के मोटापे से पीड़ित** हैं, दोनों मधुमेह के जोखिम कारक हैं।
- परीक्षण एक स्टैंड-अलोन डायग्नोस्टिक टूल नहीं है और व्यापक मूल्यांकन के लिये अन्य परीक्षणों के साथ इसका प्रयोग किया जा सकता है।

और पढ़ें: [प्री-डायबेटिज का पता लगाना, टाइप-1 डायबेटिज से निपटना](#)